PHONETICS
ध्वनि - विज्ञान

भाषा - विज्ञान के आचार्यों का कथन है कि "ध्वनि - विज्ञान मानवीय वाग्यंत्र से विस्तृत भाषायी ध्वनियों का विश्लेषण, विवेचन तथा वर्णन करता है।"

भाषायी ध्वनि वक्ता के वाग्यंत्र से उत्पन्न होता तथा श्रोता के श्रवणेन्द्रियु का विषय होती है। इसमें वे सब प्रक्रियाएं आ जाती है, जिसके अन्तर्गत उच्चारण से लेकर श्रवण तक की ध्वनि में वायुमण्डल में जो स्पन्दन वक्ता अपने वाग्यंत्र द्वारा करता है एवं श्रोता अपने श्रवणयंत्र द्वारा सुनता है। भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है. जिसके टुकड़े नहीं किये जा सकते हैं। ध्वनि के बिना भाषा की कल्पना करना सर्वथा असम्भव है। ध्वनि का मूलाधार है - मानव जिसके द्वारा बोलता है या जो वायु मुख विवर के अवयवों से घर्षण करती हुई जो प्राण वायु बहार निकलती है वही "ध्वनि" या "आवाज" है।

ध्वनियों की पहचान के लिए कुछ चिन्ह-विशेष का प्रयोग किया जाता है। ये विशेष चिन्ह ही "अक्षर" कहलाते है। अक्षर को ही वर्ण कहते हैं।

ध्वनि विज्ञान को (phonology) तथा (phonetics) नाम से जाना जाता है परन्तु (phonetics) सैद्धान्तिक और सार्वभौमिक है। भाषा ध्वनियों का सर्वांगीण अध्ययन ही 'ध्वनि' है।

Scanned by TapScanner

ध्वनि यंत्र - ध्वनि यन्त्रों का अध्ययन ध्वनि-विज्ञान का आवश्यक अंग है। इसके अन्तर्गत ध्वनियों के उच्चारण में सहायक अवयवों, ध्वनि सुनने के सहायक अंगों एवं उसके भागों का अध्ययन किया जाता है। भाषा ध्वनियों का उच्चारण जिन अंगों से होता है, वे ध्वनि-यन्त्र कहलाते हैं। इनका विवरण इस प्रकार है—

Scanned by TapScanner

प्रकार है—

1. श्वास नलिका
2. कंठ पिटक
3. स्वरतन्त्री
4. स्वरयन्त्र मुख
5. अभिकाकल
6. अलिजिह्वा
7. नासिका विवर
8. मुख विवर—
   (i) कण्ठ
   (ii) जिह्व
   (iii) ओष्ठ
   (iv) दन्त
   (v) तालु—(अ) कठोर तालु
   (ब) वर्त्स
   (स) मूर्द्धा
   (द) कोमल तालु

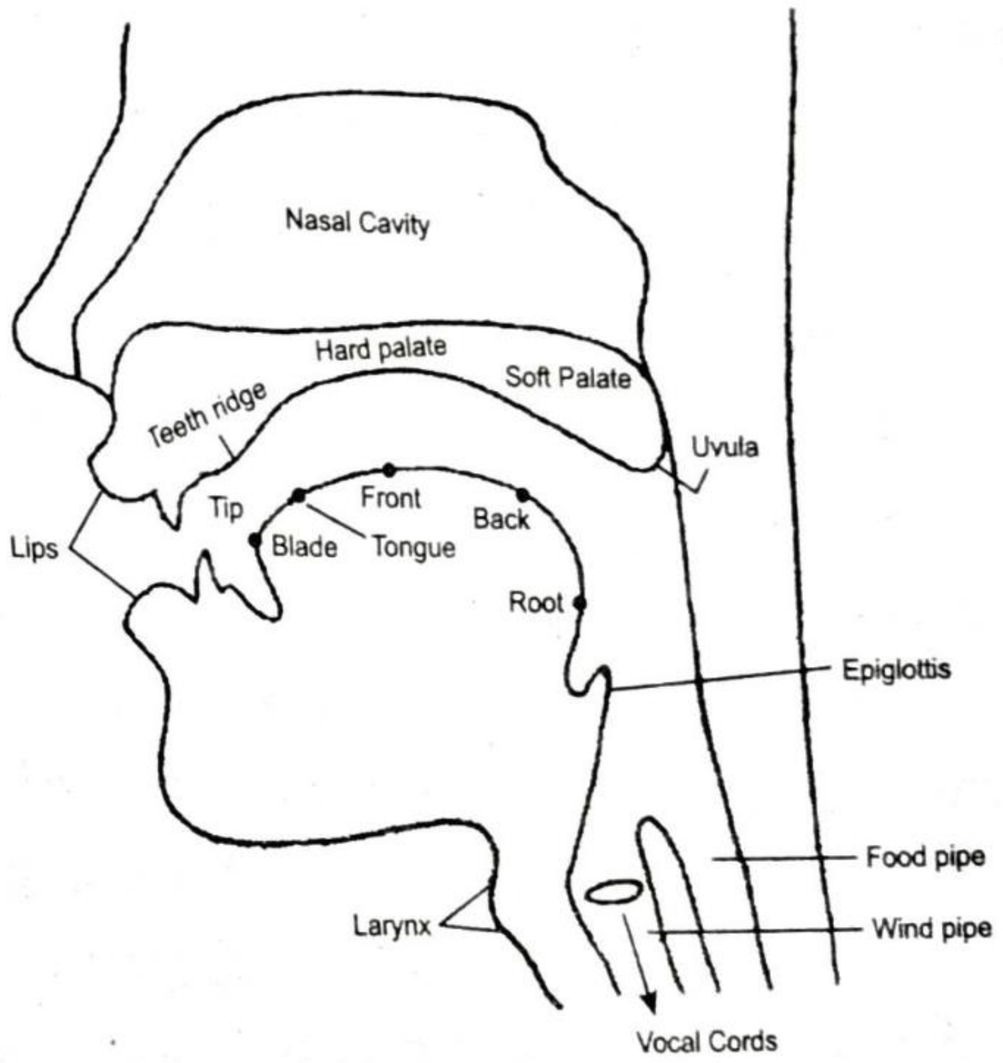

1. श्वास नलिका—मुख या नासिका से फेंफड़ों तक वायु को ले जान वाली नलिका को श्वास नलिका कहते हैं। श्वास नलिका द्वारा ही बाद में वायु को नाक या मुँह से बाहर निकाल देते हैं। इस श्वास-प्रश्वास प्रक्रिया से ध्वनि-उच्चारण होता है।

2. कंठ पिटक—मुख की ओर श्वास नलिका का अन्तिम सिरा कंठ पिटक कहलाता है। यह ध्वनि उत्पन्न करने वाला प्रधान अवश्य है।

3. स्वरतन्त्री—कंठ पिटक में पतली झिल्ली की दो पर्तें होती हैं, जिनमें बहुत पतली-पतली तन्त्रियाँ-सी होती हैं। इन्हें स्वरतन्त्री कहते हैं। ये ध्वनियों में विभिन्नता लाती हैं।

4. काकल या स्वरयन्त्र मुख—स्वर तन्त्रियों के बीच में खुले मार्ग को काकल या स्वरयन्त्र मुख कहते हैं। जिसमें होकर श्वास-प्रश्वास क्रिया होती है। स्वरतन्त्री की तरह इसकी भी चार अवस्थाएँ बनती हैं जो घोष एवं अघोष ध्वनियाँ उत्पन्न करने में सहायता करती हैं।

Scanned by TapScanner

5. अभिकाकल—भोजन नलिका के विवरर के साथ श्वास नलिका की ओर उन्मुख एक छोटी जीभ सी होती है, जो भोजन के अवसर पर श्वास नलिका के मुख को बन्द कर लिया करती है।

6. अलिजिह्वा—मुख विवर एवं नासिका विवर के सन्धि स्थल पर जिह्वा के आकार का एक छोटा-सा भग होता है, जिसे अलिजिह्वा कहते हैं। यह नासिका विवर में आने-जाने वाली वायु पर नियन्त्रण रखता है।

7. नासिका विवर—नासिका विवर श्वास-प्रवास का प्रमुख साधन है।

8. मुख विवर—यह ध्वनि उत्पादन का महत्त्वपूर्ण अवयव है; जिसका विवरण इस प्रकार है—

(अ) कण्ठ—मुख विवर का मुख्य अंग कण्ठ है। कण्ठ को स्पर्श से विभिन्न ध्वनियों का उच्चारण होता है।

(ब) जिह्वा—यह अत्यन्त सुकोमल अवयव है। अपनी सुकोमलता एवं लोच के कारण विविध आकृतियों को धारण करने के फलस्वरूप अनेक प्रकार की ध्वनियाँ निकालने में समर्थ है।

(स) ओष्ठ—जिह्वा सदृश विविध आकृतियाँ धारण करने के कारण ओष्ठ भी ध्वनियों के विविध उच्चारण में समर्थ हैं।

(द) दन्त—दन्त मूल से भी अनेक ध्वनियों का उच्चारण होता है।

(य) तालु—यह मुख विवट में ऊपर की और स्थित है। इसके चार विभेद हैं।

(i) कठोर तालु—तालु का दाँतों से लगा हुआ कठोर भाग कठोर तालु कहलाता है।

(ii) वर्त्स—तालु के नीचे की ओर कठोर तालु के मध्य का भाग वर्त्स कहलाता है।

(iii) मूर्द्धा—मुख विवर की छत का सर्वोच्च स्थान मूर्द्धा कहा जाता है।

(iv) कोमल तालु—कण्ठ की ओर का भाग कोमल तालु कहलाता है।

ध्वनि (वर्ण) की उत्पत्ति—ध्वनि (वर्ण) की उत्पत्ति के विषय में **महर्षि पाणिनि** लिखते हैं— *"आत्मा स्वगत अर्थों को एक बुद्धि विषय बनाकर उसको बताने की कामना से मन को (इस हेतु) नियुक्त करती है। मन कायाग्नि को आहत करता है। वह (कायाग्नि) प्राण वायु को प्रेरित करती है। प्राणवायु हृदय में विचरण करती हुई..... निम्न स्वर को उत्पन्न करती है। वही प्राणवायु कण्ठ स्थान में प्रवेश करके..... मध्यम स्वर को उत्पन्न करती है और फिर वही वायु मूर्द्धा स्थान में प्रवेश करके..... उच्च स्वर को उत्पन्न करती है। इस प्रकार वायु ऊपर उठकर सिर से टकराकर नीचे आती हुई मुख में स्थित कण्ठ आदि स्थानों को स्पर्श कर वर्णों को उत्पन्न करती है।"*

Scanned by TapScanner